लुज्जतुन्नूर

(अध्यात्म प्रकाश का सागर)

लेखक
हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी
मसीह मौऊद व महदी माहूद अलैहिस्सलाम

नाम पुस्तक	: लुज्जतुन्नूर (अध्यात्म प्रकाश का सागर)
लेखक	: हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी माहूद अलैहिस्सलाम
अनुवादक	: इब्नुल मेहदी लईक मुरब्बी-ए-सिलसिला एम-ए हिंदी
सेटिंग	: नईम उल हक़ क़ुरैशी मुरब्बी-ए-सिलसिला
संस्करण	: प्रथम संस्करण (हिन्दी) मार्च 2020 ई०
संख्या	: 500
प्रकाशक	: नज़ारत नश्र-व-इशाअत, क़ादियान, 143516 ज़िला-गुरदासपुर (पंजाब)
मुद्रक	: फ़ज़्ले उमर प्रिंटिंग प्रेस, क़ादियान, 143516 ज़िला-गुरदासपुर (पंजाब)

Name of book	: Lujjatunnoor (Adhyatm Parkash ka Sagar)
Author	: Hazrat Mirza Ghulam Ahmad Qadiani Masih Mou'ud W Mahdi Mahood Alaihissalam
Translator	: Ibnul Mehdi Laeeque, Murabbi-e-Silsila, M.A Hindi
Setting	: Naeem-ul-Haq Qureshi Murabbi-e-Silsila
Edition	: 1st Edition (Hindi) March 2020
Quantity	: 500
Publisher	: Nazarat Nashr-o-Isha'at, Qadian, 143516 Distt. Gurdaspur, (Punjab)
Printed at	: Fazl-e-Umar Printing Press, Qadian 143516 Distt. Gurdaspur (Punjab)

प्रथम संस्करण के टाइटल पृष्ठ का अनुवाद

يَاَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَكُمْ بُرْهَانٌ مِّن
رَّبِّكُمْ وَ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكُمْ نُوْرًا مُّبِيْنًا (अन्निसा-175)

हे लोगो! क़ुरआन एक दलील है जो ख़ुदा तआला की ओर से
तुमको मिली है और एक खुला-खुला प्रकाश है जो तुम्हारी ओर उतारा गया है।

احاط الناس من طغوىٰ ظلام علامات بها عُرف الامام

उद्दंडता के कारण अंधकार ने लोगों को घेर लिया है। यह वह निशानियाँ हैं जिन से समय के इमाम की निशांदही की गई है।

فلا تعجب بما جئنا بنور بدت عين اذا اشتد الاوام

अत: आश्चर्य न करो उस प्रकाश पर जो हम लाए हैं। क्योंकि परोक्ष से यह झरना प्रकट हो रहा है।
प्यास बढ़ती गई।

नूर को तलाश करने वालों के लिए ख़ुशख़बरी हो कि यह पुस्तक समय के मार्गदर्शक की ओर से है। इस पुस्तक का नाम इसके लेखक के समान

लुज्जतुन्नूर

(अध्यात्म प्रकाश का सागर)

है। यह पुस्तक अरब, सीरिया, बगदाद, इराक़ तथा खरासान के उलमा के नाम है ताकि ईमान के खेतों में विश्वास तथा विवेक की नहरें जारी हों।

इस की छपाई ज़ियाउल इस्लाम प्रेस में हुई। और इसका प्रकाशन प्रेस बद्र ज़िलकद्र में ख़ादिम फकीर मेहदी हुसैन प्रबन्धक पुस्तकालय घर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलातो वस्सलाम क़ादियान दारुलअमान के अधीन मोहरमुल हराम के महीने 1328 हिजरी में हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अलैहिस्सलाम नऊरुद्दीन भैरवी के समय में हुआ।
संख्या-(2100) एक पुस्तक का

मूल्य - 3 (तीन आना)

यह पत्रिका ज़ियाउल इस्लाम प्रेस क़ादियान में हकीम फ़ज़लुद्दीन की देख-रेख में प्रकाशित हुई थी। अंतिम पृष्ठ प्रेस बद्र क़ादियान में मुफ़्ती मुहम्मद सादिक़ के अधीन प्रकाशित हुआ। फ़रवरी 1910 ई० में

प्रकाशक की ओर से

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी मा'हूद अलैहिस्सलाम द्वारा लिखित पुस्तक "**लुज्जतुन्नूर**" का यह हिन्दी अनुवाद आदरणीय इब्नुल मेहदी लईक मुरब्बी-ए-सिलसिला एम. ए. हिन्दी ने किया है। तत्पश्चात आदरणीय शेख़ मुजाहिद अहमद शास्त्री (सदर रिव्यू कमेटी), आदरणीय फ़रहत अहमद आचार्य (इंचार्ज हिन्दी डेस्क), आदरणीय अली हसन एम. ए., आदरणीय नसीरुल हक़ आचार्य, आदरणीय इब्नुल मेहदी एम. ए. और आदरणीय सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद एम.ए. ने इसका रिव्यू किया है। अल्लाह तआला इन सब को उत्तम प्रतिफल प्रदान करे।

इस पुस्तक को हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ (जमाअत अहमदिया के वर्तमान ख़लीफ़ा) की अनुमति से हिन्दी प्रथम संस्करण के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है।

विनीत

हाफ़िज़ मख़्दूम शरीफ़

नाज़िर नश्र व इशाअत क़ादियान

लेखक परिचय

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी अलैहिस्सलाम

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी माहूद अलैहिस्सलाम का जन्म 1835 ई० में हिन्दुस्तान के एक कस्बे क़ादियान में हुआ। आप अपनी प्रारंभिक आयु से ही ख़ुदा की उपासना, दुआओं, पवित्र क़ुरआन और अन्य धार्मिक पुस्तकों के अध्ययन में व्यस्त रहते थे। इस्लाम जो कि उस समय चारों ओर से आक्रमणों का शिकार हो रहा था, उसकी दयनीय अवस्था को देख कर आप अलैहिस्सलाम को अत्यंत दुख होता था। इस्लाम की प्रतिरक्षा और फिर उसकी शिक्षाओं को अपने रूप में संसार के सम्मुख प्रस्तुत करने के लिए आपने 90 से अधिक पुस्तकें लिखीं और हज़ारों पत्र लिखे और बहुत से धार्मिक शास्त्रार्थ और मुनाज़रात किए। आपने बताया कि इस्लाम ही वह ज़िन्दा धर्म है जो मानवजाति का संबंध अपने वास्तविक सृष्टिकर्ता से पैदा कर सकता है और उसी के अनुसरण से मनुष्य व्यवहारिक तथा आध्यात्मिक उन्नति प्राप्त कर सकता है।

छोटी आयु से ही आप सच्चे स्वप्न, कश्फ़ और इल्हाम से सुशोभित हुए। 1889 ई० में आपने ख़ुदा तआला के आदेशानुसार बैअत[1] लेने का सिलसिला प्रारंभ किया और एक पवित्र जमाअत की नींव रखी। इल्हाम व कलाम का सिलसिला दिन प्रति दिन बढ़ता गया और आपने ख़ुदा के आदेशानुसार यह घोषणा की कि आप अंतिम युग के वही सुधारक हैं जिस की भविष्यवाणियाँ संसार के समस्त धर्मों में भिन्न-भिन्न नामों से उपस्थित हैं।

आपने यह भी दावा किया कि आप वही मसीह मौऊद व महदी माहूद हैं जिसके आने की भविष्यवाणी आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने की थी। जमाअत अहमदिया अब तक संसार के 200 से अधिक देशों में स्थापित हो चुकी है।

---

1 **बैअत**- किसी नबी, रसूल, अवतार या पीर के हाथ पर उसका मुरीद होना- अनुवादक

1908 ई० में जब आप का स्वर्गवास हुआ तो उसके पश्चात पवित्र क़ुरआन तथा आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणियों के अनुसार आपके आध्यात्मिक मिशन की पूर्णता हेतु खिलाफ़त का सिलसिला स्थापित हुआ। अत: इस समय हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ आप के पंचम ख़लीफ़ा और विश्वस्तरीय जमाअत अहमदिया के वर्तमान इमाम हैं।

पुस्तक परिचय
(लुज्जतुन्नूर)

यह पुस्तक हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस्लामी देशों अरब, फ़ारस, रोम तथा सीरिया इत्यादि के संयमी लोगों तथा नेक उलमा और सूफ़ियों को तबलीग़ करने के लिए में लिखी है तथा इसके लिखने का वास्तविक कारण वह इल्हाम तथा स्वप्न हुए जिन में आप को अल्लाह तआला ने यह ख़ुशख़बरी दी थी कि विभिन्न देशों के पवित्र तथा नेक बन्दे आप पर ईमान लाएंगे और आप के लिए दुआएं करेंगे और यह कि अल्लाह तआला आपको बरकत पर बरकत देगा यहाँ तक कि बादशाह आपके कपड़ों से बरकत ढूंढेंगे।

यह पुस्तक 1900 ई० में लिखी गई। पुस्तक से ज्ञात होता है कि हज़रत अक़दस की इच्छा कई अध्याय लिखने की थी (देखो पृष्ठ-6 लुज्जतुन्नूर) परन्तु आपने एक ही अध्याय लिखा तथा फिर ज्ञात होता है कि आपका ध्यान अन्य पुस्तकों की ओर आकर्षित हो गया और इस पुस्तक का समान्य प्रकाशन आपके देहांत के पश्चात फ़रवरी 1910 ई० में हुआ।

इस पुस्तक के आरंभ में आपने अपना उपनाम अबू महमूद अहमद लिखा है तथा इसमें आपने अपने दावा मसीह मौऊद तथा महदी माहूद की सच्चाई साबित करने के लिए युग की आवश्यकता को दलील के रूप में प्रस्तुत किया है। और अपनी जीवनी, अपने रब्बानी इल्हाम से सम्मनित होने तथा अपने युग की अवस्था का स्पष्टता तथा विस्तार से वर्णन फ़रमाया है और क़ौमों तथा धर्मों में झगड़े का वर्णन करते हुए इस्लामी संसार की धार्मिक तथा सांसारिक बुरी अवस्था का बहुत दर्दनाक नक्शा खींचा हैं। उनके आपसी मतभेद एवं फूट और उनकी भ्रष्ट आस्थाएँ और मुसलमान उलमा और सूफ़ियों और सामान्य मुसलमानों की ख़राबियों तथा कुफ्र और अधर्मता तथा इस्लाम पर आक्रमण करने वाले शत्रुओं के समक्ष उनकी बेबसी का विस्तारपूर्वक वर्णन फ़रमाया है। और अंत में पादरियों

के आक्रमणों का वर्णन करके यह ख़ुशख़बरी दी है कि अल्लाह तआला ने मेरे हाथों पर उन्हें खुली-खुली पराजय दी है तथा वे मैदान से भागने पर विवश हो चुके हैं। और फ़रमाया है कि

اليوم يئس الذين كانوا يصولون على الاسلام

(लुज्जतुन्नूर, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 16 पृष्ठ 475)

अर्थात आज इस्लाम पर आक्रमण करने वाले कुफ्फ़ार निराश हो गए हैं और उपकार का वर्णन करते हुए फ़रमाया है कि अल्लाह तआला ने मुस्लिहीन की समस्त शर्तें मुझ में एकत्र कर दीं हैं तथा उसने मुझे प्रत्येक प्रकार अध्यात्म लाभ प्रदान किए हैं और मेरी प्रत्येक इच्छा पूरी की तथा प्रत्येक प्रकार की धार्मिक और सांसारिक नेमतों से मुझे मालामाल किया है। उन नेमतों का विस्तारपूर्वक वर्णन करते हुए इस नेमत का भी वर्णन किया है कि कई बार मनुष्य इस विचार से उदास तथा हतोत्साहित और दुखी रहता है कि उसका कोई बेटा नहीं होता जो उसकी मृत्योपरांत उसका उत्तराधिकारी हो परन्तु अल्लाह तआला के फ़ज़ल और दया से इस प्रकार का दु:ख मुझे एक पल के लिए भी नहीं हुआ।

واعطانی ربی ابناءً الخدمةملته

क्योंकि मेरे रब्ब ने मुझे अपने पास से बेटे प्रदान किए हैं जो इस्लाम धर्म की सेवा करेंगे।

(लुज्जतुन्नूर, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 16 पृष्ठ 398)

इस पुस्तक में आप ने इस आरोप को भी रद्द किया कि नाऊज़ूबिल्लाह आप ने अपनी पुस्तक में नेक उलमा का अपमान किया है। आप फ़रमाते हैं:-

"हम नेक तथा सालेह उलमा तथा सम्माननीय शुरफ़ा के अपमान से ख़ुदा तआला की पनाह (शरण) मांगते हैं बेशक वे मुसलमान हों या आर्य या ईसाई या किसी और धर्म के हों अपितु हम तो उनके अधम तथा बेहूदा लोगों में से भी केवल उनका वर्णन करते हैं जो अपनी व्यर्थ बातों और निंदा तथा गाली-गलौज में विख्यात हो चुके हैं। परन्तु जो लोग मूर्खता और गाली-गलौज से बरी हैं हम उनका भलाई से वर्णन करते और उनका सम्मान करते तथा उनसे भाईयों के समान प्रेम रखते हैं।

(लुज्जतुन्नूर से अनुवाद, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 16 पृष्ठ 409)

और इस पुस्तक में हज़रत अक़दस ने यह महान भविष्यवाणी भी दर्ज फ़रमाई है कि:-

"अल्लाह तआला मेरी सहायता करेगा यहाँ तक कि मेरा आदेश अथवा मेरी सन्देश धरती के पूर्व तथा पश्चिम में पहुंचेगा।"

(लुज्जतुन्नूर से अनुवाद, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 16 पृष्ठ 408)

यह मूल पुस्तक अरबी भाषा में है और उसके नीचे फ़ारसी भाषा में अनुवाद भी लिखा गया है।

ख़ाकसार

जलालुद्दीन शम्स